स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन

विवेकानंद के दर्शन की ज्ञान मीमांसा-

विवेकानंद विज्ञान को दो भागों वस्तु जगत का ज्ञान और आत्म तत्व का ज्ञान में विभाजित किया है। विवेकानंद के निशान दोनों प्रकार के ज्ञान सत्य और मनुष्य को इन दोनों प्रकार के ज्ञान को अर्जित करना चाहिए। विज्ञान के लिए प्रत्यक्ष विधि का और आप तत्व के ज्ञान के लिए अध्ययन एवं सत्संग विधि का प्रयोग करना चाहिए।

विवेकानंद के दर्शन की आचार मीमांसा

विवेकानंद जी मोक्ष ईश्वर प्राप्ति आत्मानुभूति सभी को एक ही अर्थ के रूप में मानते थे इनकी प्राप्ति कर्म योग भक्ति योग और ज्ञानियों किसी भी विधि से की जा सकती है मनुष्य को सर्वप्रथम अपने आत्म तत्व की अनुभूति करनी चाहिए फिर दूसरों में अद्वैत की अनुभूति करनी चाहिए मनुष्य को मन, वचन, कर्म से शुद्ध होना चाहिए । अपनी आजीविका इमानदारी से कम आनी चाहिये।

विवेकानंद के दर्शन की तत्व मीमांसा

स्वामी जी के अनुसार इस सृष्टि का करता एवं उपादान कारण ब्रहम ही है और यह निराकार , सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। उसके अनुसार वस्तु जगत का निर्माण ब्रहम की माया शक्ति का ही परिणाम है। माया और जगत दोनों ही सत्य है ।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ

स्वामी जी के अनुसार भारत की शिक्षा हमें उच्च शिक्षा की आवश्यकता है।, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। शिक्षा इस प्रकार की है जिससे बालकों में चिंतन और सृजनात्मकता की क्षमता का विकास हो अर्थात स्वामी जी के अनुसार मनुष्य की आंतरिक पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य

1-आत्मविश्वास की जागृति

2-राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास

3-पूर्ण आंतरिक गुणों का विकास

4-चारित्रिक विकास

5-शारीरिक और मानसिक प्रगति

6-जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति

7-उत्तम नागरिकों का निर्माण

8-धार्मिक प्रवृत्ति का विकास

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

स्वामी जी के अनुसार हमें अपने ज्ञान के विभिन्न अंगों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता है हमें प्राविधिक शिक्षा और उन सब विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है जिससे हमारे देश के उद्योगों का विकास हो और मनुष्य नौकरियां खोजने के बजाय अपने स्वयं के लिए पर्याप्त धन का अर्जन कर सके।

पाठ्यक्रम में इतिहास, गणित, खेलकूद, अर्थशास्त्र, भूगोल ,राजनीति, व्यायाम, विज्ञान, गृह, विज्ञान, कला, समाज, राष्ट्र सेवा, भाषा, कृषि, व्यावसायिक, विषय समाहित है। धर्म पुराण, भजन, कीर्तन, उपदेश श्रवण दर्शन और साधु संगीति आध्यात्मिक विषय के अंतर्गत होने चाहिए।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षक की भूमिका

1-शिक्षा को चाहिए कि वह बालक के समक्ष सभी बाधाओं को दूर कर दे।

2-बालक को संसार के प्रति दृष्टिकोण तय करने में सहयोग दें।

3-शिक्षक को बालक के विकास में पूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए।

4-उनको बालक के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत और निकट का संबंध रखना चाहिए।

5-शिक्षक में प्रेम त्याग की भावना हो

स्वामी विवेकानंद के अनुसार अनुशासन

आत्मानुशासन पर जोर दिया ।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षार्थी

स्वामी जी के अनुसार अपने अंदर जाओ और उपनिषदों को स्वयं में से बाहर निकालो तुम सबसे महान पुस्तक हो जो कभी थी या होगी जब तक अंतरात्मा नहीं खुलती तब तक संपूर्ण बाय शिक्षण बेकार है छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा की भावना होनी चाहिए।

विभिन्न प्रकार की शिक्षा

1-जन शिक्षा

2-स्त्री शिक्षा

3-धर्म शिक्षा

4-राष्ट्रीय शिक्षा

5-व्यावसायिक शिक्षा

<u>शिक्षा में स्वामी विवेकानंद जी का योगदान</u>

1-भारत में वेदांत दर्शन का प्रचार करके विद्यार्थियों में एक महान विचारधारा का स्मरण दिलाया।

2-उन्होंने बताया बच्चों को अपनी अपरिचित अंतर्निहित गुणों से परिचित कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

3-शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए या उनका कहना था।

4-संस्कृति को पहचानना और शिक्षा के माध्यम से उन्नत बनाना आदि उनका दर्शन था।

5-पाठ्यक्रम में रोजगार की शिक्षा और श्रजन पूर्ण कार्यों को महत्व दिया।

6-उन्होंने मनुष्य त्व जातीय वाद पवित्रता दृढ़ संकल्प और नारी का आदर व सम्मान पर बहुत महत्व दिया।